असुविधा को नजरअन्दाज किया जा रहा है। इस संबंध में बीकानेर में एक सर्वदलीय आन्दोलन बीकानेर से सीधी हावड़ा रेल सेवा चालू करने की मांग ले कर चल रहा है और इस संबंध में पूर्व रेल राज्यमंत्री, श्री सुरेश कलमाडी जी, ने सीधी रेल सेवा शुरू करने का आश्वासन भी दिया था, परन्तु अभी तक कोई कार्यवाई नहीं हुई है।

अतः मैं माननीय अध्यक्ष महोदय के माध्यम से सरकार से आग्रह करूंगा कि वे बीकानेर से हावड़ा तक सीधी रेल सेवा शुरू करने की घोषणा करें।

[अनुवाद]

(छः) विशाखापत्तनम हवाई अड्डे के विकास के लिए कदम उठाये जाने की आवश्यकता

डा.टी. सुब्बारामी रेड्डी (विशाखापत्तनम) : अध्यक्ष महोदय, विशाखपत्तनम हवाई अड्डे पर अभी केवल बोइंग विमान ही उतर सकते हैं और वह भी सूरज छिपने से पहले। उद्योगों के तेज विकास के लिए इस हवाई अड्डे का विकास किया जाना अत्यावश्यक है, जो गरीबी दूर करने और रोजगार के अवसर बढ़ाकर युवाओं के बीच निराशा दूर करने का एकमात्र साधन है। विशाखापत्तनम सिविल हवाई अड्डा भारतीय नौसेना के नियंत्रनाधीन है जिसे विमानपत्तन का विकास और विस्तार करने का काम नहीं करता है। विशाखपत्तनम हवाई अड्डे का उन्नयन, रखरखाव तथा विस्तार एयरबस तथा रात के समय उड़ानों के प्रचालन के लिए बहुत आवश्यक है।

इसलिए, मैं केन्द्र सरकार से अनुरोध करता हूं कि वे विशाखापत्तनम हवाई अड्डे के विकास का कार्य भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण को सौंपे। मैं माननीय नागर विमानन मंत्री से अनुरोध करता हूं कि वे पहल करें तथा आवश्यक कार्यवाही करें।

(सात) लोअर दामोदर नदी के आस-पास की भूमि को कृषि योग्य बनाने के कार्य को पूरा करने के लिए संशोधित योजना को स्वीकृति दिये जाने की आवश्यकता

श्री हन्नान मोल्लाह (उलूबेरिया) : लोअर दामोदर नदी के आस पास की भूमि को कृषि योग्य बनाने के कार्य को पूरा करने हेतु पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा 1979 में भेजी गई संशोधित योजना को केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकृति न दिये जाने के कारण पश्चिम बंगाल के कई भागों जिसमें हावड़ा, हुगली वर्तमान और मिदनापुर जिले शामिल है, में बाढ़ और जल-प्लावन के कारण गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई है। इसके साथ ही बाढ़ रोकने के लिए रूपनारायणपुर नदी के तल को गहरा करने का कार्य भी अत्यावश्यक है। परन्तु गंगा बाढ़ नियंत्रण आयोग इस कार्य को शुरू नहीं कर सका है।

दक्षिण बंगाल का काफी बड़ा हिस्सा और मेरा पूरा निर्वाचन क्षेत्र लोअर दामोदर नदी के आस पास की भूमि को कृषि योग्य बनाने के कार्य के पूरा न होने के कारण प्रति वर्ष गंभीर समस्याओं का सामना करता है।

मैं सरकार से अनुरोध करूंगा कि यह कार्य शुरू करने में वह और अधिक विलम्ब न करे।

(आठ) कन्याकुमारी को एक अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक विहार के रूप में विकसित किये जाने की आवश्यकता

श्री एन. डेनिस (नागरकोइल) : माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे देश के सुदूर दक्षिणी हिस्से, कन्याकुमारी का विकास एक महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल के रूप में किये जाने की आवश्यकता है। प्रतिदिन हजारो देशी और विदेशी पर्यटक, तीर्थ यात्री और अन्य व्यक्ति इस सुदूर दक्षिणी हिस्से को देखने आते हैं जहां तीन समुद्रों का मिलन होता है और सूर्योदय तथा सुर्यास्त के दृश्य देखने को मिलते हैं। यहां पर लोग समुद्र के बीच बने प्रसिद्ध विवेकानन्द रॉक मेमोरियल जहां विवेकानन्दजी ने साधना की थी, गांधी मैमोरियल बिल्डिंग **'गांधी मंडपम'** तथा अन्य पर्यटकों को आकर्षित करने वाले दृष्य देखने और प्रसिद्ध भगवती अम्मा मन्दिर में पूजा करने आते हैं। राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भी, इस स्थान का विकास किया जाना आवश्यक है। अब, अनेक कठिनाईयों जैसे पानी का अभाव, होटलों की अपर्याप्तता, समुचित रेल और विमान सेवाओं के अभाव के कारण, पर्यटक अपने आपको बहुत पंगु महसूस करते हैं।

इसलिए, केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि वह एक मास्टर प्लान लागू करके इन कठिनाइयों को दूर करने तथा कन्याकुमारी को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर का एक आकर्षक पर्यटन स्थल बनाने के लिए तत्काल कदम उठाए।

पूर्वाह्न 11.32 बजे

मंत्रि परिषद् में विश्वास प्रस्ताव

[अनुवाद]

प्रधान मंत्री (श्री एच.डी. देवेगौड़ा) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

> "कि यह सभा मंत्रि परिषद् में अपना विश्वास व्यक्त करती है।"

अध्यक्ष महोदय : प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ :

> "कि यह सभा मंत्रि परिषद् में अपना विश्वास व्यक्त करती है।"

इस पर चर्चा के लिए सात घंटे का समय आबंटित किया गया है।

[हिन्दी]

श्री जार्ज फर्नान्डीज (नालंदा) : अध्यक्ष जी, यह सदन चलाने का तरीका नहीं है। ...**(व्यवधान)**

श्री राजेन्द अग्निहोत्री (झांसी) : अध्यक्ष जी, यह भ्रष्टाचार का मुद्दा है, आप इसे दबाने की कोशिश न करें।... **(व्यवधान)**

श्री जार्ज फर्नान्डीज : आप मुझसे पूछिये कि मैं क्या चाहता हूं। मैं कुछ बातें आपके समाने रखना चाहता हूं। ... **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया इधर देखिए, कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मुझे शून्यकाल के लिए 59 सूचनाएं प्राप्त हुई है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप पहले मेरी बात क्यों नहीं सुनते?

[हिन्दी]

प्लीज, पहले आप सुन लीजिए।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैं आप सबको अवसर देना चाहता था। मैंने सूचनाएं पढ़ी हैं। उनमें से अनेक मामले संसद सदस्यों के निर्वाचन क्षेत्रों में हुई घटनाओं से संबंधित हैं। मैं संसद सदस्यों की भावनाओं को समझता हूं। मैं भी एक संसद सदस्य हूं और आपकी तरह, मेरा भी एक निर्वाचन-क्षेत्र है। इसलिए, मैं उस बात को समझता हूं। जिन मामलों का उल्लेख किया गया है, मैं आपको आश्वासन देता हूं...

(व्यवधान)

श्री जार्ज फर्नान्डीज : मैं निर्वाचन क्षेत्र के मामले की बात नहीं कर रहा हूं। मैं एक राष्ट्रीय मामले की बात कर रहा हूं। **(व्यवधान)** मैंने कोई प्रस्ताव पेश नहीं किया है। मैं राष्ट्रीय मुद्दे की बात कर रहा हूं। **(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (लखनऊ) : जब अध्यक्ष जी खड़े हो गये हैं, तो आप लोगों को खड़े नहीं होना चाहिए।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री जार्ज, ऐसा नहीं है। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि सब मामले संसद सदस्यों के सम्बद्ध निर्वाचन क्षेत्रों से संबंधित हैं। कुछ अन्य मामले भी हैं जिनकी चर्चा वाद-विवाद के दौरान की जा सकती है।

(व्यवधान)

श्री जार्ज फर्नान्डीज : अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों सहित यह एक राष्ट्रीय मुद्दा है जिससे अन्तर्राष्ट्रीय पुलिय संगठन का संबंध है। हम चाहते हैं कि सभा इस बारे में चर्चा करे। यह सभा कल स्थगित हो जाएगी। हम इस बारे में कब चर्चा करेंगे?

अध्यक्ष महोदय : श्री जार्ज, जब मैं खड़ा हूं तो आपको खड़ा नहीं होना चाहिए। आप इतना अच्छी तरह जानते हैं।

श्री जार्ज फर्नान्डीज : मैं क्षमा चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय : ठीक है। मैं जो कहना चाहता हूं, वह यह है कि विश्वास प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान अन्य मामलों को भी उठाया जा सकता है।

श्री जार्ज फर्नान्डीज : कुछ ऐसे मामले हैं जिनको चर्चा से पहले स्पष्ट किया जाना चाहिए।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष जी, हम चाहते हैं कि सदन की कार्यवाही ठीक चले। सदन शांति के साथ चले। अगर चर्चा में थोड़ी गर्मा-गर्मी होती है तो वह बात अलग है।

लेकिन सारी दूनिया देख रही है, सारा देश देख रहा है, इसलिये सदन ... **(व्यवधान)** अध्यक्ष महोदय, मामला 377 का नहीं है। आपने कुछ सदस्यों को अनुमति दी और कुछ बिना अनुमति के रह गये। सब सदस्यों को अनुमति नहीं दी जा सकती है। मैं आपकी कठिनाई से परिचित हूं। यह अधिवेशन एक विशेष कार्य के लिये बुलाया गया है। वह कार्य हमें सम्पन्न करना है, लेकिन बाहर का घटना चक्र हमारे कब्जे में नहीं है और हमारे हिसाब से नहीं चल रहा है। आज जिस प्रस्ताव पर चर्चा होने जा रही है, उसमें युरिया स्कैंडल बड़े पैमाने पर उठने वाला है। मैं इसके विस्तार में नहीं जाना चाहता हूं। आप कहेंगे कि जब चर्चा होगी तब उसको उठाया जा सकता है, लेकिन अगर चर्चा में उसको उठाया जायेगा तो उसके साथ न्याय नहीं होगा। यह जो कुछ स्कैंडल है, ऐसे पांच साल पूरे स्कैंडलों से भरे हुए थे, लेकिन 130 करोड़ रुपया गायब हो गया। वह किस की जेब में गया और कहां गया? इसकी सी.बी.आई. इनक्वायरी कर रही है। इनक्वायरी में कहां तक प्रगति हुई है, सदन को इस बारे में विश्वास में लिया जाना चाहिये। पहले भी ऐसे हो चुका है। प्रधान मंत्री अब भाषण देने के लिये खड़े हो रहे हैं। वह हमें यह आश्वासन दें कि इस सम्बन्ध में शाम तक सारे तथ्य सदन के सामने रखे जायेंगे जिससे कल फिर इस मामले को उठाया जा सके। इस मामले को विश्वास प्रस्ताव के नाम पर दबने नहीं दिया जायेगा। आखिर यहां संख्या बल से फैसला होना

है, लेकिन मैं समझता हूं कि यह भ्रष्टाचार कोई संख्या का मामला नहीं है। उधर बैठे हुए सदस्य इसमें रूचि रखते होंगे कि यह क्या हुआ है। यह बहुत बड़ा स्कैंडल है। इसके लिये कौन जिम्मेदार है? मैं चाहता हूं कि प्रधान मंत्री महोदय इस पर वक्तव्य दें। इस बारे में जो भी कुछ हुआ है, उससे सदन को शाम तक अवगत कराया जाये। प्रधान मंत्री खुद किसान हैं। प्रधान मंत्री के सत्ता सम्भालते ही यूरिया का मामला आ गया, किसानों से जुड़ा हुआ मामला आ गया। हम प्रधान मंत्री से आश्वासन चाहते हैं कि यह जो 133 करोड़ रुपया है, यह पूरी की पूरी रकम वसूल की जायेगी और किसी को माफ नहीं किया जायेगा चाहे कोई कितना भी बड़ा हो। हमे वापस रुपया चाहिये। वह देश की गाढ़ी कमाई का पैसा है, पसीने की कमाई है। इस तरह से किसी को रुपये लूटने की और विदेशी बैंक में जमा करने की इजाजत नहीं दी जा सकती है।

श्री जार्ज फर्नान्डीज : अध्यक्ष महोदय, मैं एक ही बात कहना चाहता हूं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : विपक्ष के नेता का जो कुछ कहना था, वह कह चुके हैं यह काफी है।

[हिन्दी]

श्री जार्ज फर्नान्डीज : अध्यक्ष महोदय, नेता विरोधी दल ने जो बात छेड़ी है, मैं उसी पर कुछ सफाई और करना चाहता हूं। ... **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया नहीं।

[हिन्दी]

श्री जार्ज फर्नान्डीज : नेता विरोधी दल ने जो मांग की है, उसमें क्या-क्या चीजे हैं, वह मैं प्रधान मंत्री जी से सुनना चाहता हूं ... **(व्यवधान)** हम जानना चाहते हैं कि यूरिया आयात करने का ... **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : हम इस मुद्दे पर चर्चा नहीं कर रहे हैं। यह काफी है। नहीं, मैं इस मुद्दे पर चर्चा की अनुमति नहीं दूंगा।

[हिन्दी]

श्री जार्ज फर्नान्डीज : क्या-क्या चीजें सामने आई हैं, वह हमें बतायो जाये ... **(व्यवधान)** अध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री मेरी बात सुनने के लिये तैयार हैं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यह काफी है। मैं इस मुद्दे पर चर्चा की अनुमति नहीं दे सकता हूं। इतना पर्याप्त है। अब माननीय प्रधान मंत्री जी बोलेंगे।

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : अध्यक्ष महोदय, विश्वास-मत के प्रस्ताव पर अपने विचार व्यक्त करने से पूर्व विपक्ष के नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी तथा अन्य वरिष्ठ नेता श्री जार्ज फर्नान्डीज ने उर्वरक से संबंधित मुद्दा उठाया था, जिसमें लगभग 133 करोड़ रुपये की धनराशि अंतर्ग्रस्त है। उन्होंने यह भी कहा था कि सरकार को आज सांय तक इस बारे में सुस्पष्ट उत्तर दे देना चाहिए। मैं इस सभा को यह आश्वासन देना चाहता हूं कि किसी भी तथ्यों को छुपाने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता... **(व्यवधान)** मैं भी इसका रहस्योद्घाटन करने का इतना ही इच्छुक हूं ...**(व्यवधान)** मैं भी यही जानना चाहता हूं कि इसके लिए वास्तव में कौन व्यक्ति दोषी हैं तथा यह भी जानना चाहता हूं कि इसके लिए कौन जिम्मेदार हैं ...**(व्यवधान)**। कृपया थोड़ी-देर के लिए मुझे सहयोग दीजिए। हमें जांच पूरी होने से पहले ही निष्कर्ष नहीं निकालने चाहिये। जांच चल रही है।

महोदय, जहां तक मुझे याद है कि हमारे माननीय विपक्ष के नेता- जो प्रधान मंत्री थे तथा लगभग पन्द्रह दिन उसी कुर्सी पर विराजमान रहे हैं, जिस पर मैं बैठा हूं - ने भी इस विशेष मामले का अध्ययन किया है तथा संबंधित अधिकारियों को इसकी तेजी से जांच करने के निर्देश दिये हैं। मैं जांच-कार्य में हस्तक्षेप नहीं कर रहा हूं। मैंने इस संबंध में अभी तक किसी अधिकारी को नहीं बुलाया है, मैं तो केवल इस मामले से सम्बद्ध दस्तावेजों का अध्ययन कर रहा हूं। इन दस्तावेजों से कुछ तथ्य उजागर हुए हैं। मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या वे तथ्य सही हैं तथा वास्तविकताओं पर आधारित हैं। मैं समाचार-पत्रों में छपी खबरों पर नहीं जाना चाहता। जब तक केन्द्रीय जांच ब्यूरो के निदेशक मुझे पूरी जानकारी नहीं दे देते, तब तक बिना समुचित सामग्री के हम इस सभा के समक्ष उत्तर नहीं दे सकते ...**(व्यवधान)** कल मैं अविश्वास-प्रस्ताव पर उत्तर दूंगा। ...**(व्यवधान)** माफ कीजिए, विश्वास के प्रस्ताव पर। इस विशिष्ट मामले पर, मैं इस सभा के समक्ष सारी सामग्री एवं संबंधित तथ्य प्रस्तुत करना चाहता हूं। मैं इस यूरिया घोटाले से संबंधित कोई भी बात छिपाना नहीं चाहता... **(व्यवधान)**

डा. मुरली मनोहर जोशी (इलाहाबाद) : प्रधान मंत्री महोदय, आज सांय तक इस मुद्दे पर तथ्यों सहित उत्तर देने में आपको क्या परेशानी है? यह एक साधारण-सी बात है। विपक्ष के नेता ने आपसे अनुरोध किया है कि आज सांय तक तथ्यों सहित उत्तर दे दें... **(व्यवधान)**

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : जैसा कि मैंने आपको बताया, जांच अभी चल रही है। अतः, संबंधित अधिकारी हैदराबाद में हैं। वे वापस आयेंगे तथा सभी संबंधित दस्तावेज एवं पूरा विवरण देंगे। जब तक

मुझे पूरी सामग्री नहीं मिल जाती, तब तक मैं इसका उत्तर नहीं दे सकता। मैं सभा को गुमराह नहीं करूंगा। इसी कारण मैं ऐसा कह रहा हूं। मेरा मन साफ है। मैं सारी सामग्री देना चाहता हूं ...**(व्यवधान)**

डा. मुरली मनोहर जोशी : क्या आप कल सभा के समक्ष सभी तथ्य प्रस्तुत कर देंगे? ... **(व्यवधान)** मैं प्रधान मंत्री महोदय से यह अनुरोध करता हूं कि वह सभा के समक्ष तथ्य प्रस्तुत करें, न कि बहस का उत्तर। हम चाहते हैं कि इस सभा के समक्ष तथ्यों को अलग-से प्रस्तुत किया जाये। प्रधान मंत्री ने अभी-अभी अपना वक्तव्य दिया है। इस मुद्दे के संबंध में सरकार के पास जो तथ्य मौजूद हैं, उन्हें सरकार द्वारा एक वक्तव्य के रूप में इस सभा के समक्ष रखा जाये ... **(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : गृह मंत्री महोदय...

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : भूतपूर्व गृह मंत्री महोदय, मेरे विचार से यह मांग उचित नहीं हैं। जबकि इस मामले पर जांच चल रही है, आप यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि सभी तथ्यों को इस सभा के समक्ष रखा जाये। ऐसा करने से जांच-कार्य पर प्रतिकुल असर पड़ेगा। मेरे विचार से आप आवश्यकता से अधिक मांग कर रहे हैं। जो कुछ जानकारी भी उपलब्ध है, मेरे विचार से प्रधान मंत्री महोदय पहले ही कह चुके हैं कि वह इस संबंध में अपना अन्तिम उत्तर दे देंगे। लेकिन, इस स्तर पर, मेरे विचार से आप पूरे तथ्य रखने की मांग नहीं कर सकते हैं क्योंकि ऐसा करने से जांच कार्य पर प्रतिकुल प्रभाव पडेगा।

(व्यवधान)

डा. मुरली मनोहर जोशी : यदि प्रधान मंत्री महोदय अपने उत्तर में इस बारे में तथ्य बताने को तैयार हैं, तो उन्हीं तथ्यों को उनके वक्तव्य के रूप मे रखने में क्या कठिनाई है। **(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : अब हम उनकी बात सुन लें।

डा. मुरली मनोहर जोशी : वह गृह मंत्री भी हैं। वह प्रधान मंत्री भी हैं। वह ये सभी बातें जानते हैं। अतः, सभा के समक्ष इस संबंध में अलग से एक पूर्ण वक्तव्य प्रस्तुत किया जा सकता है।

अध्यक्ष महोदय : डा. जोशी, बस बहुत हो गया।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, नहीं। आप ऐसा नहीं कर सकते। इस प्रकार बिना सोचे-समझे आरोप मत लगाइये। मैं आपको बोलने की अनुमति नहीं देता। कृपया बैठ जाइये।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइये।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : अरे, क्या बात कर रहे हो?

(व्यवधान)

[अनुवाद]

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : माननीय अध्यक्ष महोदय, आज मैं इस माननीय सभा का विश्वास प्राप्त करने के लिए खड़ा हुआ हूं क्योंकि माननीय राष्ट्रपतिजी ने मुझे प्रधान मंत्री पद की जिम्मेदारी सम्भालने के लिए बुलाया है। उन्होंने मुझे यह भी कहा है कि मैं इस सभा के समक्ष पेश होऊं तथा इस महीने की 12 तारीख से पहले विश्वास का मत प्राप्त करूं।

इस समय मैं केवल कुछ ही शब्द कहना चाहता हूं। हमारे भारतीय इतिहास में पहली बार ग्यारवीं लोक सभा अपना एक अद्भूत स्वरूप लेकर आई है। इस सभा की संरचना में लगभग 32 राष्ट्रीय दलों के साथ-साथ क्षेत्रीय दल भी शामिल हैं।

महोदय, मुझे पता है कि इस संसद में मुझसे अधिक वरिष्ठ, परिपक्व एवं अनुभवी अनेक नेता मौजूद हैं। इस विकट स्थिति में प्रधान मंत्री के रूप में प्रशासन की जिम्मेदारी मुझ पर थौपी गई है क्योंकि कांग्रेस सहित सभी धर्म निरपेक्ष दलों ने मुझे कहा है कि ...

[हिन्दी]

एक माननीय सदस्य : कांग्रेस सेक्यूलर नहीं है।

[अनुवाद]

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : कृपया प्रतीक्षा कीजिये। कृपया कुछ समय के लिए रूकिए। आप जो कुछ भी कहना चाहते हैं, उसके लिए आपको पर्याप्त अवसर मिलेगा मैं आपके बीच में बाधा उत्पन्न नहीं करूंगा। मैं पूरी चर्चा के दौरान बैठा रहूंगा तथा इस सदन से बाहर नहीं जाऊंगा। मैं प्रत्येक माननीय सदस्य के विचार सुनूंगा तथा चर्चा के दौरान जो भी मुद्दे उठाये जायेंगे, उन सभी का उत्तर देने की कोशिश करूंगा।

महोदय, यह स्थिति कैसे उत्पन्न हुई? ग्यारहवीं लोक सभा के चुनावों से पहले बहुत-से राजनैतिक पण्डितों तथा समाचार-पत्रों के स्तम्भ-लेखकों ने अपने विचार व्यक्त किये थे कि ग्यारवीं लोक सभा 'त्रिशंकु संसद' के रूप में सामने आएगी। गत एक वर्ष से, इस देश में मीडिया के माध्यम से सार्वजनिक और निजी दोनों ही रूप में यह बहस हो रही थी कि केन्द्र में सरकार बनाने के लिए किसी भी राजनैतिक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलेगा। ग्यारहवीं लोक सभा के चुनावों से पहले यही मत व्यक्त किया जा रहा था।

महोदय, ग्यारहवीं लोक सभा के चुनाव समाप्त हो जाने के बाद, जनता ने क्या जनादेश दिया है? जनता ने इस देश को चलाने के लिए

किसी भी एक राजनैतिक दल को जनादेश नहीं दिया है। हां, विपक्ष के हमारे माननीय नेता को, जो भूतपूर्व प्रधान मंत्री है, राष्ट्रपतिजी द्वारा जारी नियुक्ति आदेश के अनुसार प्रधान मंत्री पद का उत्तरदायित्व सम्भालते हुए इस देश को चलाने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। चूंकि राष्ट्रपति जी ने अपनी सूझबूझ के अनुसार यह सोचा था कि यह सबसे बड़ा दल है, उन्होंने यह अवसर उन्हें दिया तथा श्री अटल बिहारी वाजपेयी को 31 मई, 1996 से पहले अपना बहुमत सिद्ध करने के लिए कहा। 27 एवं 28 मई को जो घटित हुआ तथा इस सभा में जो चर्चा हुई, मैं उसके विस्तार में नहीं जाना चाहता। 28 मई को श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अपना त्याग पत्र दे दिया। उसी दिन राष्ट्रपति जी ने मुझे बुलाया तथा सरकार के गठन के लिए नियुक्ति आदेश दिये। सभी धर्मनिरपेक्ष दलों ने 15 मई बैठक की तथा मुझे धर्मनिरपेक्ष मोर्चे का नेता चुन लिया।

महोदय, मैं इस सभा का सदस्य नहीं हूं। इसके बावजूद, समूचे संयुक्त मोर्चे के मित्र दलों ने निर्णय लिया तथा मुझ में विश्वास व्यक्त किया, जबकि जहां तक संसदीय प्रणाली के कार्यकरण का संबंध है, मैं ज्यादा अनुभवी एवं परिपक्व राजनीतिज्ञ नहीं हूं। उन सभी ने मुझ में विश्वास व्यक्त किया तथा मुझे जिम्मेदारी लेने को कहा। साथ ही, कांग्रेस कार्य समिति ने 12 मई, को एक प्रस्ताव पारित किया था जिसमें कहा गया था कि वे सरकार नहीं बना रहे हैं और यह भी कहा गया था कि वे भा.ज.पा. सरकार को किसी भी कीमत पर समर्थन नहीं देंगे और यदि कोई धर्मनिरपेक्ष दल यह उत्तरदायित्व लेगा तो वे बिना शर्त अपना समर्थन देंगे। यह कांग्रेस कार्य समिति का प्रस्ताव था। इस पृष्ठभूमि में राष्ट्रपति जी ने 28 मई को 8 बजे मुझे बुलाकर यह नया कार्य लेने के लिए कहा था।

मैं एक बहुत छोटा आदमी हूं। यदि हम इतिहास को देखें तो इसी पद पर, पंडित जवाहरलाल नेहरू ने जो हमारे भारतीय इतिहास में एक शीर्षस्थ व्यक्ति थे, ने प्रधान मंत्री के रूप में कार्य किया, अंतिम तक, अर्थात श्री अटल बिहारी वाजपेयी चाहे वे दस या पन्द्रह दिन तक रहे, संसदीय जीवन में उनके अनुभव और प्रौढ़ता के लिए मैं उनका सम्मान करता हूं। मैं अब उनका स्थान राष्ट्रपति जी की सदन में बहुमत सिद्ध करने की शर्त पर ले रहा हूं। समय सीमा 12 जून तक है। इसीलिए मैं इस माननीय सभा के समक्ष इस विश्वास प्रस्ताव पर इसमें अंतिम विचार जानने के लिए आ रहा हूं।

हमें वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना चाहिए सहयोगी दलों के साथ भा.ज.पा. बहुमत सिद्ध क्यों नहीं कर सकी? इसे 15 दिन का समय दिया गया था। मैं इसका कोई प्रयोजन नहीं बता रहा हूं। उन्होंने यह देखने के लिए कि अन्य दलों से बहुमत लिया जाये, कोई गलत तरीका नहीं अपनाया। हमारे वरिष्ठ नेताओं के अनुसार उन्होंने इसी सभा में यह बताया था कि वे किसी तरह की जोड़ तोड़ नहीं करना चाहते और वे यह देखना चाहते थे कि उनकी सरकार जारी रहे क्योंकि वे संख्या में अधिक थे। अटल बिहारी जी ने यह तर्क दिया था। यदि संख्या पर विचार किया जाना है, तो 160 और सहयोगी दलों की संख्या मिला कर 542 के सदन में लगभग 194 बनती है, क्या यह कहना संभव है कि उन्हें जनादेश मिला है?

मैं यह प्रश्न आपके विचारार्थ रखता हूं।

महोदय, आज, मैं एक बार फिर इस बात को दोहराता हूं कि जनादेश मिली जुली सरकार के पक्ष में है। यह बिल्कुल स्पष्ट है, ग्यारहवीं लोक सभा में किसी भी दल को बहुमत नहीं मिला है। कांग्रेस ने दूसरा स्थान प्राप्त किया है और अन्य सभी दलों को, एक या दो को छोड़कर, संयुक्त मोर्चा में 192 सदस्य लाने में सफल रहे थे।

महोदय, हमारा साझा कार्यक्रम है। हमने प्राथमिकता निर्धारित की है, और इन सभी बातों को पहले ही राष्ट्र को सम्मुख रखा गया है। और सदन के माननीय सदस्य साझे कार्यक्रम के बारे में अपने मत व्यक्त कर सकते हैं।

महोदय, इस निर्णायक सभा में मैं इस सभा के सभी सदस्यों से यह अनुरोध करता हूं कि, जब राजनैतिक माहौल इतना भ्रामक है, जब राजनैतिक माहौल इतना अस्थिर है, तो हमें आवश्यक सहयोग के साथ कार्य करना चाहिए। मैं उनसे सरकार को केवल सही कार्यों के लिए ही अपना पूरा सहयोग देने का आग्रह करता हूं। यदि उन्हें लगे कि सरकार सही दिशा में नहीं जा रही है, तब वे सरकार की गलती को उजागर करने के लिए स्वतंत्र हैं। मैं कुछ छिपा नहीं रहा हूं। मैं इस बात को बहुत स्पष्ट कर रहा हूं। यदि यह सरकार, अथवा यह मंत्रालय किसी बात पर गलती पर है, तो वे इसे उजागर कर सकते हैं। इस सदन को इस सरकार के गलत कार्यों को उजागर करने का हर अधिकार है मैं इस सदन के प्रति उत्तरदायी हूं। मैं इस देश की 90 करोड़ जनसंख्या के प्रति उत्तरदायी हूं। मैं आपको इस संबंध में आश्वस्त करना चाहता हूं।

एक नया अध्याय प्रारम्भ हो गया है। मिली जुली सरकार का समय आ गया है। महोदय, यह लगभग दो वर्ष पूर्व भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति, श्री वेंकटरमन ने बताया था। मिली जुली सरकार का समय आ गया है। ऐसा मत उन्होंने लगभग दो वर्ष पूर्व व्यक्त किया था। यह सही निकला है। आज कुछ मित्रों के दिमाग में कुछ शक है कि श्री देवेगौड़ा सभी मामलों में समझौता करेंगे। मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं-मैं इस माननीय सभा को यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि—कांग्रेस ने अपना समर्थन देते समय कोई शर्त नहीं रखी है। यही नहीं, अब तक उन्होंने किसी मामले में हस्तक्षेप नहीं किया है। कोई निर्णय लेने में उन्होंने कोई हस्तक्षेप नहीं किया है। लेकिन मैंने स्वयं ही यह निर्णय लिया कि सदन द्वारा अपना ठोस समर्थन दिए जाने तक, सभा में विश्वास मत प्राप्त किए जाने तक, कोई महत्वपूर्ण निर्णय न किया जाये। मैंने अपने सभी मंत्रियों को इस माह की बारह तारीख तक, कल परिणाम जानने तक कोई प्रमुख निर्णय न लेने के लिए

अनुदेश जारी किए हैं। मैं वर्तमान मिली जुली सरकार की समय अवधि के बारे में शक नहीं करना चाहता। मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं। जनादेश मिली जुली सरकार के लिए है और यह सरकार पांच वर्षों तक चलेगी। हम यह सिद्ध करने जा रहे हैं।

महोदय, यह आत्म प्रशंसा की बात नहीं है। मैं डेढ़ साल कर्नाटक का मुख्य मंत्री रहा। मैंने पिछले डेढ़ वर्ष में कर्नाटक में एक भी घोटाला नहीं होने दिया। मैं आपको यह बताना चाहता हूं, कि अन्य वरिष्ठ नेताओं की तुलना में मैं एक अनुभवहीन राजनीतिज्ञ हो सकता हूं, लेकिन इस सभा को मैं एक बात बता रहा हूं...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदयः कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं आपको इसकी अनुमति नहीं दे रहा हूं।

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : महोदय, मुख्य मंत्री के रूप में मैंने क्या किया है, यह तो समय बतायेगा।

यह सरकार अल्पसंख्यकों, पिछड़े वर्गों के लोगों, कृषि से जुड़े लोगों के लिए क्या करने जा रही है, इसका उल्लेख हमारे कार्यक्रम में किया गया है।

मध्याह्न 12.00 बजे

कुछ देर के लिए इन्तजार कीजिए। मैं इस सदन से भाग नहीं रहा हूं।...**(व्यवधान)** कृपया इन्तजार कीजिए। हमें देखना चाहिए।

मुझे सदन की संरचना और इस सदन के बहुत से नेताओं की वरिष्ठता के बारे में पूरी जानकारी है। तीन पूर्व प्रधान मंत्री हैं और इन्द्रजीत गुप्तजी और सोमनाथ चटर्जी जैसे वरिष्ठत कामरेड हैं। मैं उनका नाम नहीं लेना चाहता। तीन वर्ष पूर्व मैं पीछे की बैंच पर, कोने में बैठा था। मैंने पीछे की सीट पर बैठ कर सभा की कार्यवाहियों को देखा था। जब ये सभी वरिष्ठ नेता बोला करते थे, तो मैं बहुत ध्यानपूर्वक सुनता था—मुझे सीखने दें और मैं वरिष्ठ नेताओं से कुछ सीखना चाहता हूं। अपने राजनैतिक जीवन में यह मेरी विशेषता है। मैं आपको स्पष्ट रूप से यह बताना चाहता हूं कि मैं यह नहीं कहने जा रहा हूं कि मैं बहुत विद्वान हूं। न मैं अर्थशास्त्री हूं और न ही वैज्ञानिक। लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि मैं इस देश के लोगों की समस्याओं को जानता हूं। मैं आपको एक बात बताऊंगा। ...**(व्यवधान)** महोदय, इसी पद पर 17 अथवा 18 वर्षों तक कई नेताओं ने प्रधान मंत्री के रूप में कार्य किया है। और आज यदि मैं यहां पर 5 वर्ष के लिए हूं या 5 महीने के लिए हूं यह मापदण्ड नहीं होगा बल्कि इस देश की जनता के लिए एक प्रधान मंत्री की हैसियत से जो काम करूंगा वही महत्वपूर्ण होगा। मैं अपने समय का प्रत्येक मिनट और प्रत्येक घंटा देश के लिए लगाऊंगा और मैं यह साबित कर दूंगा कि मैं इस देश के गरीब तबके, दलित लोगों और अल्पसंख्यकों के साथ हूं। मैं यह करने जा रहा हूं। यही मेरी चिन्ता है। इस तरह मैं कार्य करता हूं। इस तरह से मैंने कार्य किया है और मैं यह पूरी ईमानदारी से कह रहा हूं। मैं वचन दे रहा हूं। यदि मैं कोई गलती करूं, तो यह सदन उसकी जांच कर सकता है। मैं आपको केवल बात बताना चाहता हूं। महोदय, मैं सभा का अधिक समय नहीं लेना चाहता क्योंकि और बहुत से सदस्यों को बोलना है। इस वाद-विवाद में और कई वरिष्ठ नेताओं को भाग लेना है और मेरे विचार से हमारे निवर्तमान प्रधान मंत्री, श्री अटल बिहारी वाजपेयी आज बोलेंगे। मैं केवल आपको यह आश्वासन देता हूं कि जो प्रश्न उठाये जायेंगे, उनका कल में विस्तृत उत्तर दूंगा और इस सभा द्वारा अपेक्षित सभी जानकारी मैं सभा को प्रदान करूंगा।

इन शब्दों के साथ, मैं बड़ी विनम्रता से इस सदन के सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध करता हूं कि वे इस विश्वास प्रस्ताव को स्वीकृत करें।

श्री संतोष मोहन देव (सिल्चर) : मैं जानना चाहता हूं कि इस परिचर्चा की समय-सीमा क्या है? आपने सात घंटे बताया है। अभी वाजपेयी जी बोलने के इच्छुक नहीं हैं। किसी ने मुझे बताया कि वह कल बोलेंगे। पहले यह माना जा रहा था कि ये सभी वक्ता आज ही इन सात घन्टों के अन्दर ही बोलेंगे।...**(व्यवधान)** आज जो भी निर्णय लेंगे हम सभी उसको मानेंगे। परन्तु, कृपया आप यह बताइये कि आपका निर्णय क्या है क्योंकि कल की बैठक में यह हमने आपके ऊपर छोड़ दिया था और आपने कहा था कि आप हमें सूचित करेंगे। हमें सूचित नहीं किया गया है। अगर मैं आपके निर्णय लेने के अधिकार क्षेत्र में दखलअंदाजी नहीं कर रहा तो आप कृपया हमें अपने निर्णय से अवगत कराएं ताकि हम भी अपने वक्ताओं के बारे में निर्णय ले सकें।

अध्यक्ष महोदय : मैंने घोषणा कर दी है कि सात घन्टे निर्धारित किये गए हैं। प्रत्येक दल को, जिसमें छोटे दल भी शामिल हैं, समय दिया गया है और संख्यानुसार ही आबंटित किया गया है। मेरे विचार में कुछ मिनट पश्चात् आपको यह ब्यौरा मिल जाएगा। अगर आप आबंटित समय का ध्यान रखते हुए चलेंगे तो भोजनावकाश के बिना हम आज ही परिचर्चा समाप्त कर सकेंगे।

श्री राम नाईक (मुम्बई उत्तर) : जहां तक भोजनावकाश और समय का संबंध है, हमने कल ही आपको अपने विचार स्पष्ट कर दिये थे। मैं यह इसलिये कह रहा हूं क्योंकि समिति में हुई चर्चा को यहां उठाया जा रहा है। कल ही हमने आपको स्पष्ट कर दिया था कि हम चाहते हैं कि परिचर्चा दो दिल चले। हमने यह भी स्पष्ट कर दिया था कि हमारी तरफ से श्री जसवंत सिंह चर्चा आरम्भ करेंगे और श्री वाजपेयी कल बोलेंगे। इन सभी बातों को अति स्पष्ट कर दिया गया था। इसलिये, हम चाहते हैं कि परिचर्चा कल तक चले। हमने यह कल ही कह दिया था। हम यह आपके और सभा के ध्यान में इसलिये ला रहे हैं क्योंकि समिति में हुई चर्चा को माननीय सदस्य यहां पर उठा रहे हैं।...**(व्यवधान)**